HIN1B09a_cours-06-2013-03-04

-ते ही / जैसे ही / -ते-ते

प्रिय गीता,

मैं आज सवेरे दिल्ली पहुँचा। पहुँचते ही सोचा कि तुम्हें पत्र लिख दूँ, नहीं तो तुम डाकिये की राह देखते-देखते परेशान हो जाओगी। मैं घर से बहुत देर से निकला था। स्टेशन पर पहुँचते-पहुँचते गाड़ी आने का समय हो चला था। मेरे पहुँचते ही घंटी बजी और दो-तीन मिनट में गाड़ी आ गयी। गाड़ी के प्लेटफ़ार्म पर आते ही लोगों में भगदड़ मच गयी। सभी गाड़ी में घुसने की कोशिश कर रहे थे। मैं भी सामान उठाकर भागने लगा। मेरे सामने एक मोटा, दाढ़ी वाला आदमी खड़ा था। मैं जल्दी में उसे देख नहीं पाया, जैसे ही मैं चलने को हुआ, उससे टकरा गया। मेरे उससे टकराते ही वह गिरने को हुआ। उसके साथ मैं भी गिरते-गिरते बचा। तुरन्त ही मैं सँभल गया और फिर उठकर दौड़ा। मेरे चढ़ते-चढ़ते गाड़ी पूरी भर गयी थी। मैंने कुली को तीन रुपये दिये तो रुपये पाते ही उसने मुझे एक बर्थ दे दी और मैं सामान रखकर ऊपर चढ़ गया। लेकिन इस हड़बड़ी में एक नुकसान हो गया। गाड़ी के चलते ही मेरा थैला गिर गया। तुमने जो सेंट की शीशी दी थी वह लुढ़क कर नीचे गिरी और गिरते ही टूट गयी। मैं बर्थ पर लेट गया। लेटते ही मुझे नींद आ गयी। दिल्ली आयी नहीं कि मेरी आँख खुल गयी। थोड़ी देर में स्टेशन भी आ गया।

मैं स्टेशन पर उतरा। गाड़ी देर से स्टेशन पहुँची थी। दिल्ली पहुँचते-पहुँचते गाड़ी पन्द्रह मिनट लेट हो गयी थी। लेकिन तब तक भी गोपाल स्टेशन नहीं पहुँचा था। उसका इन्तजार करते-करते मैं परेशान हो गया था। तभी वह दौड़े-दौड़े आया। उसने कहा कि अलार्म बजते ही उसकी आँख खुल गयी थी, लेकिन वह फिर सो गया था। उसे फिर उठते-उठते देर हो गयी। किसी तरह हम स्टेशन से बाहर निकले। किस्मत से बाहर निकलते ही हमें टैक्सी मिल गयी नहीं तो हमें घंटे भर और इंतज़ार करना पड़ता। जैसे ही हम घर पहुँचे, टॉमी दौड़कर बाहर आया और मुझे देखते ही वह पैरों से लिपट गया। कितना प्यारा कुत्ता है वह! मुझे देखते-देखते वह बड़ा हुआ है।

दोपहर को थोड़ी देर आराम किया। सोकर उठा भी नहीं था कि अड़ोस-पड़ोस के लोग मिलने आ गये। उनको विदा करके बैठा ही था कि गोपाल आकर बताने लगा कि शाम को सात बजे नुमाइश देखने चलेंगे। शाम को मैं, गोपाल, गीतू सभी लोग मेला देखने गये। मेले में बड़ी अजीबो-गरीब चीज़ें देखने को मिलीं। एक जगह हमने टैंक का मॉडल देखा। वह बटन दबाते ही गोलियाँ बरसाता है। दूसरी जगह हमने अजीब-अजीब शीशे देखे जिनमें शक्ल बड़ी अज़ीब दिखायी पड़ती थी। हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गया था। मैं एक शीशे के सामने जाते ही लम्बा दिखने लगा और दूसरे के सामने जाते ही बहुत चौड़ा। बाद में गीतू शीशे के सामने आयी और शीशा देखते ही बड़े जोर से हँसने लगी। घूमते-घूमते हम लोग थक गये थे इसलिए चाय पीने चाय की दुकान पर गये। बहुत बढ़िया चाट थी आलू-मटर की। उसे देखते ही मेरे मुँह में पानी भर आया।

तुम्हारा ही